गुलाब ग्रंथावली : पंचम खंड

आशीर्वचन

श्रीधर शास्त्री

श्री गुलाब खंडेलवाल ऊर्मि-गीतों के गायक तथा मुग्धकारी कल्पना के कवि हैं। इनकी कल्पनाएँ यथार्थ के मोड़ पर रुकी हुई, संगीत की संभावनाओं से परिपूर्ण, बड़ी मार्मिक एवं धार्मिक हैं। लगता है, श्री गुलाबजी ने बाह्य तथा अंतर्मन के रूपों को बड़ी सूक्ष्मता से देखा है, अनुभव किया है। शायद इसीलिये इनकी कविताओं में मानव-सौंदर्य, दैव, प्रेम, वियोग आदि का मनोहारी चित्रण प्राप्त है, एक सूक्ष्म अवलोकन की झलक मिलती है।

वास्तव में श्री गुलाब खंडेलवाल की कविताएँ मन के अचेतन गर्भ से निःसृत कलात्मक प्रसूतियाँ हैं जिन्हें कल के चेतन, सीमित और रूढ़िग्रस्त मानदण्डों से नहीं समझा जा सकता। इनमें तो जीवन की सीमाओं के पार स्वर और ज्योति से निर्मित एक अलौकिक लोक का आविर्भाव हुआ है। 'प्रभो ! इस बंधन की बलिहारी' के आवेष्टन से प्राप्त वेदना को श्री गुलाब खंडेलवाल ने आर्द्र बनकर जो काव्य का सौम्य शिल्प उपस्थित किया है, वह मानव हृदय के चिरंतन सत्य पर प्रतिष्ठित है। वह परमात्मा के प्रति आस्था का, असीम के प्रति ससीम का निवेदन है। उसमें भौतिक सीमाओं में मानसिक प्रवृत्तियों के स्निग्ध-स्पर्शी, चेतन प्रकृति को स्पंदित करनेवाले भाव हैं, अनुभूतियों का विश्व है, प्रशांत लय है, शाश्वत नाता है --- ऐसे नातेदार कवि को सादर प्रणाम !

श्रीधर शास्त्री
प्रधानमंत्री
अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग